सावरकर

क्रांतिकारी, दया याचिकाएं और हिंदू राष्ट्रवाद

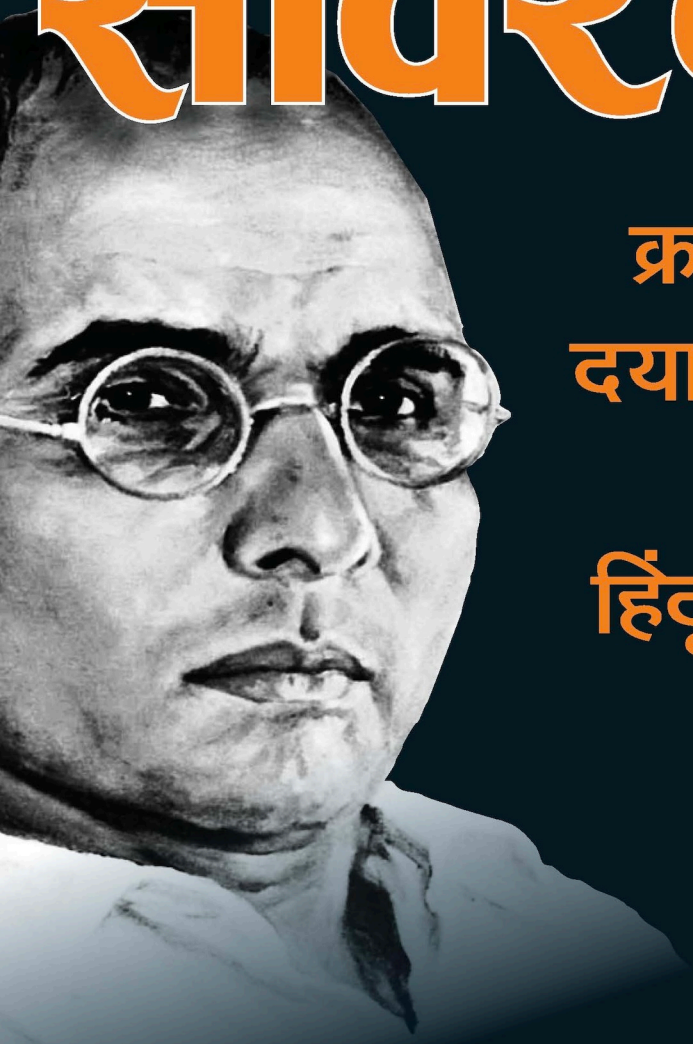

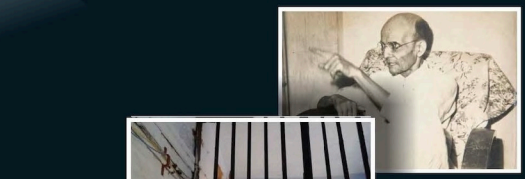

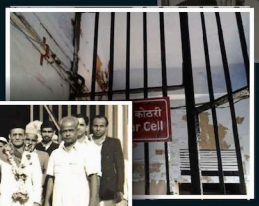

राम पुनियानी

अनुवाद : नूतन भाकल

सावरकर : क्रांतिकारी, दया याचिकाएं और हिंदू राष्ट्रवाद

सावरकर :
क्रांतिकारी, दया याचिकाएं
और
हिंदू राष्ट्रवाद

राम पुनियानी

अनुवाद : नूतन भाकल

उद्भावना

© राम पुनियानी

प्रथम संस्करण : जुलाई 2022

द्वितीय संस्करण : फरवरी 2023

प्रकाशक : उद्‌भावना
ए 21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया
जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095
फोन : 35001911

मुद्रक : प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110095

मूल्य : 100/- रुपये

(इस पुस्तक में छपे विचार लेखक के अपने हैं, प्रकाशक का इनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

प्रस्तावना

हाल के वर्षों में सावरकर का नाम समाचारों में अक्सर आता रहा है। हाल पिछले दिनों रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जैसे ही यह बयान दिया कि गांधी जी के आग्रह पर सावरकर ने दया याचिका लिखी थी, बहस गर्म हो गई। पिछले कुछ वर्षों में सावरकर की कई जीवनियां प्रकाशित हुई हैं। उनका व्यक्तित्व जटिल है; शुरुआत में वे अंग्रेज विरोधी क्रांतिकारी थे, परंतु बाद में उन्होंने अंग्रेजों के आगे अपने आप को पूरी तरह नत–मस्तक कर दिया था। अंग्रेजों ने उन्हें रिहा किया और माहवार पेंशन भी दी। उन्होंने द्विराष्ट्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया और हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा, हिंदुत्व शब्द को लोकप्रिय बनाया। रत्नागिरी में अपनी नजरबंदी के दौरान उन्होंने एक मंदिर भी स्थापित किया, जो अस्पृश्यों के लिए खुला था और उन्होंने अंतर्जातीय भोज का भी आयोजन किया।

कुल मिलाकर, जीवन के पहले हिस्से में अपनी भूमिका को लेकर उन्हें सराहा गया, जबकि अंग्रेजों की सेवा और स्वातंत्र्य आंदोलन के विरोध संबंधी बातें छिपाई गईं। मेरे लेखों को यह संकलन सावरकर के जीवन के विभिन्न चरणों और हिंदुत्व की विचारधारा को समझने के लिए किया गया है, जिसका उन्होंने प्रचार किया।

मैं "सत्य हिंदी" के डॉ. मुकेश कुमार का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे दया याचिकाएं उपलब्ध करवाने में मदद की।

राम पुनियानी
समाज और धर्मनिरपेक्षता अध्ययन केंद्र,
मुंबई,
जून, 2022

अनुक्रम

भूमिका 9

सावरकर : घटनाक्रम : मुख्य अंश 13

खंड 1

सावरकर : जीवन और विचारधारा

- वीर सावरकर : अर्ध वीर 17
- सावरकर, हिंदुत्व और द्वि–राष्ट्र का सिद्धांत 22
- गांधी के पुतले की हत्या का आयोजन क्यों? 27
- गांधी जयंती पर : 'गोडसे जिंदाबाद' का ट्विटर पर तूफ़ान 31
- क्या गांधी ने सावरकर को दया याचिकाएं दाखिल करने के लिए कहा था? 35

खंड 2

सावरकर का राष्ट्रवाद बनाम भारतीय राष्ट्रवाद

- स्वातंत्र्य आंदोलन, सावरकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 40
- विभाजन की प्रक्रिया की सामाजिक जड़ें 47
- हिंदुत्व और हिंदू धर्म में क्या संबंध है? 52
- हिंदू राष्ट्र का एजेंडा क्या है? 56
- हिंदू राष्ट्रवाद : उत्पत्ति से वर्तमान शासन तक – एक अवलोकन 60

चर्चा

मुद्दा क्या है, "हिंदू–मुस्लिम संबंध" या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राष्ट्रवाद संबंधी अवधारणा 72

पुस्तक समीक्षा

अतीत का विघटन : अतीत की प्रस्तुति 79

परिशिष्ट

1 दया याचिका – 1913 85
2 दया याचिका – 1914 89
3 दया याचिका – 1917 92
4 दया याचिका – 1920 98
5 दया याचिका – 1921 106
6 गणेश सावरकर की ओर से दया याचिका – 1922 110
7 श्रीमती यमुना बाई की ओर से याचिका 114
8 डॉ. सावरकर को गांधी का उत्तर 117
9 तीनों सावरकर भाई 119

भूमिका

समय–समय पर लिखे गए मेरे लेखों के इस संकलन का उद्देश्य विनायक दामोदर सावरकर की सच्चाई को सामने लाना है। सन 1910 में सावरकर को अंडमान जेल में भेजा गया और सन 1911 से ही सावरकर ने अपनी दया याचिकाएं लिखने की शुरुआत की, जो संख्या में 5 थीं। महात्मा गांधी उस वक्त दक्षिण अफ्रीका में थे और सन 1915 में ही वे भारत लौटे थे। जैसा कि इस संकलन के एक लेख में दर्शाया गया है कि गांधी ने सावरकर के छोटे भाई डॉ. नारायण के पत्र के जवाब में यह कहा था कि याचिका का प्रारूप तैयार किया जाए,दया याचना के लिए नहीं बल्कि सावरकर की कैद की सच्चाई के बारे में सब कुछ बताने के लिए।

वर्तमान शासन सावरकर को अपना संरक्षक संत मानता है क्योंकि उन्होंने ही हिंदू राष्ट्रवाद की अवधारणा को स्पष्ट किया था : हिंदुत्व माने "संपूर्ण हिंदुत्व" की राजनीति, जो आर्य नस्ल, सिंधु से लेकर समुद्रों तक की भूमि और ब्राह्मणवादी संस्कृति पर आधारित हो। इसी विचारधारा ने वर्तमान शासनकर्ताओं द्वारा अपनाई गई सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव को रखा था। वर्तमान में सबको उलझन में डालने का प्रयत्न भी हो रहा है कि हिंदू धर्म और हिंदुत्व एक ही है। इस संकलन के एक लेख में इन दोनों के बीच भेद को स्पष्ट किया गया है कि गांधी हिंदू धर्म है और गोडसे हिंदुत्व है।

शुरुआत में सावरकर अंग्रेज विरोधी क्रांतिकारी थे। वे हिंसा में यकीन रखते थे और उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ हिंसा के माध्यम से राजनीति शुरू करने के लिए 'अभिनव भारत' की स्थापना की। उस वक्त 'अनुशीलन समिति' और बाद में 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' अंग्रेजों के खिलाफ सक्रिय थे, जो गुप्त संस्थाओं के तौर पर कार्य करते थे और अंग्रेज हुकूमत